संस्कृत विभाग

"संस्कृत–समवाय"

वार्षिक रिपोर्ट 2021–22

"संस्कृत–समवाय" पीजीडीएवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति है। वर्तमान शैक्षणिक सत्र के विभागीय गतिविधियों का संक्षिप्त एवं सम्पादित विवरण प्रस्तुत है।

इस सत्र में नए छात्रों का प्रवेश पूर्ण रूप से ऑनलाइन माध्यम से हुआ। छात्रों के प्रवेश के उपरान्त 22 नवम्बर 2021 से नए छात्रों की कक्षाएं भी ऑनलाइन शुरू हो गई। नए छात्रों के प्रवेश से संबंधित सभी कार्यों को विभाग के अध्यक्ष डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा, रोहित कुमार और डॉ. प्रमिता मिश्रा जी ने व्यवस्थित रूप से सम्पन्न किया। नए छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से संस्कृत विभाग के द्वारा एक विभागीय आभासी मिलन कार्यक्रम के तहत विभाग एवं महाविद्यालय के गतिविधियों की जानकारी दी गई।

इसके पश्चात् 02 मार्च 2022 को संस्कृत विभाग की संस्कृत समवाय समिति के तत्वावधान में एक विभागीय स्तर पर संस्कृत श्लोक गायन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें संस्कृत (ऑनर्स) और संस्कृत (प्रोग्राम) दोनों पाठ्यक्रम के बच्चों ने भाग लिया। इस आयोजन की शुरुआत संस्कृत की गौरवशाली परम्परा मंगलाचरण से की गई। मंगलाचरण लौकिक और वैदिक दोनों किए गए। तदुपरान्त विभाग के अध्यक्ष डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा सर का आशीर्वचन हुआ। अपने संबोधन में डॉ. गिरिधर सर ने कहा कि आप सभी उपस्थित बच्चों का विभाग की तरफ से स्वागत करता हूँ। हमारी इस तरह का मिलन दो वर्षों के बाद हो रहा है, इसलिए आप सब की उत्सुकता को महसूस कर रहा हूँ। बाकि सबको आशीर्वाद और शुभकामनाएं। उस उद्‌बोधन के बाद प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। उसके बाद विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ. दिलीप कुमार झा सर का भी उद्‌बोधन हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि आपकी पीढ़ी इंस्टाग्राम और फेसबुक की पीढ़ी है। जिसकी अपनी चुनौतियां हैं। अभी तक हम सब आभासी माध्यम से मिलते थे। अब इस तरह से मिल रहें हैं। यह हम सबके लिए अच्छा है क्योंकि संस्कृत के पठन पाठन का तरीका आमने–सामने का है। उन्होंने आगे कहा कि हाल में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आई है। जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा को फिर से फोकस किया गया है, जिस कारण हम सभी संस्कृत का अध्ययन–अध्यापन करने वालों की जिम्मेदारी बढ़ गई है। संस्कृत के बारे में नासा के शोध की भी चर्चा उन्होंने की। अन्त में धन्यवाद ज्ञापन रोहित कुमार के द्वारा किया गया। जिसमें उन्होंने कहा कि आगामी अप्रैल में जब एक विशिष्ट विद्वान का व्याख्यान होगा, उस कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। इसके बाद शान्ति पाठ के द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

इसके पश्चात् संस्कृत विभाग की संस्कृत समवाय समिति के द्वारा 19 अप्रैल 2022 मंगलवार को "वेद व्याख्यान मञ्जरी" व्याख्यान माला के अंतर्गत प्रसिद्ध वैदिक गणित के विद्वान और दिल्ली

विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रो. दयाशंकर तिवारी जी का व्याख्यान आयोजित किया। इस व्याख्यान का विषय ''वैदिक वाङ्मय में ज्ञान–विज्ञान परंपरा'' रखा गया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित करके किया गया। संस्कृत की परंपरा अनुसार मंगलाचरण किया गया। वैदिक मंगलाचरण तृतीय वर्ष के छात्र पीयूष भास्कर ने किया, वहीं लौकिक मंगलाचरण द्वितीय वर्ष से शिवानी और राजकुमार ने किया।

विषय प्रवर्तन करते हुए संस्कृत विभाग के वरिष्ठ आचार्य डॉ. दिलीप कुमार झा ने कहा कि संस्कृत भाषा ज्ञान विज्ञान की भाषा है। संस्कृत आत्मा का उद्घोष है, आवाज है, हमारी विरासत है। इस गौरवशाली विरासत को भूला देने की कोशिश की जा रही है। पूजापाठ, दकियानूसी सोच की भाषा संस्कृत को माना जाने लगा है। जबकि वास्तविकता यह है कि संस्कृत प्रगतिशील सोच, विचारों, गतिविधियों की भाषा है। प्राचीन भारत के किसी भी तरह के ज्ञान विज्ञान की बात करते हैं तो उसके मूल संस्कृत में देखने को मिलता है। जहां तक विज्ञान का सवाल है तो विज्ञान, दर्शन, धर्म की चर्चा एक साथ होती है। जितने भी बड़े दार्शनिक रहे हैं, वे सारे वैज्ञानिक भी रहें हैं। 1687 ई. में न्यूटन सेव के वृक्ष के नीचे लेटे थे। पहले भी सेव गिरता था। उस समय भी गिरा। तब न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत दिया। परन्तु उससे हजारों वर्ष पहले महर्षि कणाद ने कहा था कि प्रत्येक क्रिया के बराबर प्रतिक्रिया होती है। हम अपनी विरासत को भूल गए हैं। इसी तरह डॉ. झा ने आर्यभट्ट, बौधायन इत्यादि महर्षियों का उल्लेख करते हुए, उनके योगदान को रेखांकित किया। संस्कृत विभाग के ही आचार्य और प्रभारी डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि यह हम सब के लिए परम सौभाग्य का विषय है और यह संयोग भी है कि जिसके विजन और सोच से यह वेद–व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला को हम लोगों ने प्रारंभ किया था वे आज यहां स्वयं उपस्थित हैं। पूर्व प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल सर की प्रेरणा से यह बौद्धिक श्रृंखला 2017 में प्रारंभ की गई थी।

डॉ. मुकेश अग्रवाल ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि आपके इस व्याख्यान की महत्ता तभी है जब आप उस वैदिक ज्ञान की चर्चा अपने मित्र, घर परिवार में करेंगे। गौरवशाली अतीत को अपने डी ए वी के बच्चों को बताने के लिए हमने यह व्याख्यानमाला प्रारंभ किया था। प्राख्यात राष्ट्रवादी विचारक प्रो. अवनीजेश अवस्थी ने इस अवसर पर कहा कि बाबा साहेब अम्बेडकर ने संस्कृत को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए सबसे पहले कहा था। परीक्षा के बोझ के कारण बच्चे विज्ञान और दूसरे पहलू पर ध्यान नहीं दे पाते। जेएनयू के आनन्द रंगनाथन जैसे लोग बहुत ही मेहनत से संस्कृत के ज्ञान विज्ञान पर काम कर रहे हैं। मुझे इस बात का मलाल है कि मैं मूल संस्कृत पढ़ नहीं पाता, बोल नहीं पाता। हमारे मित्र नरेन्द्र कोहली भी बराबर यह कहते थे कि संस्कृत में अथाह ज्ञान राशि है।

इस व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता प्रो. दयाशंकर तिवारी ने बहुत ही विस्तृत व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने कहा कि वैदिक वाङ्मय केवल वेद नहीं है बल्कि वेद के साथ साथ ब्राह्मण और वेदांग शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण छंद और ज्योतिष भी है। वेद इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार के अलौकिक मार्गों को भी बताते हैं। वेद इंसान बनना सिखाते हैं। प्रकृति के पुजारी वेदों के रचनाकार है। वेद में प्रकृति का मानवीकरण किया है, ऋषि सबसे बड़े और सबसे प्रमुख वैज्ञानिक थे। उन्होंने ऋग्वेद, अथर्ववेद के मंत्रों के आधार पर विज्ञान के आधुनिक स्वरूप को समझाया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रमिता मिश्रा ने किया। इस अवसर पर विभाग के अन्य आचार्य डॉ. वंदना रानी, डॉ. रेणुबाला, नागेंद्र कुमार, रोहित कुमार एवं डॉ. राजेश कुमार उपस्थित थे।